ISSN -2393-8048, July-December 2022, Submitted in July 2022, iajesm2014@gmail.com

अमरकान्त के उपन्यासों में अंधविश्वास

किरण, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर
डॉ० मीनेश जैन, प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, सनराइज विश्वविद्यालय, अलवर, राजस्थान

शोध–सार

धर्म का मानव जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। धर्म से विहीन मनुष्य को पशु तुल्य माना जाता है। धर्म से रहित व्यक्ति क्रूर, कपटी, दुराचारी तथा अनैतिक कर्म करने वाला होता है। धर्म मनुष्य के अन्तःकरण में समाहित कर्त्तव्यबोध है, उदात्त भावनाएँ तथा शिष्टाचार है, जिसके माध्यम से मनुष्य मानवीय गुणों से संपन्न हो पाता है। धर्म से मनुष्य का नैतिक आधार बल सबल होता है। धर्म के अनुकूल आचरण करने से मनुष्य को आनन्द की प्राप्ति होती है। यह आत्मा तथा परमात्मा के रहस्य का ज्ञान करवाता है तथा मनुष्य के अन्तःकरण को दया, ममता, करूणा व सात्विकता की भावनाओं से सिक्त कर देता है। धर्म भारतीय संस्कृति का मूलाधार है। इसे भारतीय संस्कृति का प्राणतत्त्व भी कहा जाता है। जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त मनुष्य जीवन धर्म–कर्म से बन्धा रहता है।

मुख्य शब्द – नैतिकता, धर्म–कर्म, भौतिकवाद, अध्यात्मवाद, अवसरवाद।

विश्वास और श्रद्धा का बहुत उच्च स्थान रहा है। ठीक उसी प्रकार बड़ों के प्रति सम्मान, छोटों के प्रति स्नेह, दूसरों के लिए अपने सुखों का त्याग कर कष्ट सहना भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण परम्परा है। इतना ही नहीं भारतीय संस्कृति में धर्म को भी बहुत ऊँचा स्थान दिया गया है। किन्तु आज धार्मिक विकृतियाँ सांस्कृतिक समस्याओं के रूप में पनपने लगी हैं।

भारतीय सांस्कृतिक समस्याओं के रूप में पाश्चात्य संस्कृति की भोगवादी स्वार्थी सोच के परिणामस्वरूप भिन्न–भिन्न सांस्कृतिक समस्याएँ दिखाई दे रही हैं। औद्योगिक सभ्यता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा यूरोपीय भौतिकवादी संस्कृति ऐसे ही क्रान्तिकारी तत्व थे जिनका भारतीय सामन्तवादी, विश्वासमूलक दृष्टिकोण तथा धार्मिक आध्यात्मिक संस्कृति से संघर्ष हुआ। इस संघर्ष ने नवीन विचारधारा को जन्म दिया।

"द्वितीय विश्व युद्ध और भारत विभाजन– ये दो ऐसी स्वतन्त्रता प्राप्ति के आस–पास की घटनाएँ हैं जिसने हमारी जीवन पद्धति, हमारी पारम्परिक मूल्य, प्रतिष्ठा, नैतिक मापदण्ड आदि को बहुत गहरे मर्माहत और प्रभावित किया। दूसरे विश्व युद्ध की विभीषिका से जहाँ मृत्यु का भय सताने लगा, वहीं देश विभाजन की त्रासदी के चलते भारतीय परिवेश में नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों का तेजी के साथ विघटन हुआ। बँटवारे ने हमारी शहरी–ग्रामीण दोनों क्षेत्रों को बुरी तरह से प्रभावित किया तथा राष्ट्रीय आस्था, विश्वास, आदर्श और मर्यादा को जबरदस्त ठेस पहुँचाई, परिणामतः अवसरवादी और विघटनकारी प्रवृतियों का अवतार हुआ।"[1]

पारिवारिक सम्बन्धों में बिखराव का मुख्य कारण पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव है। भारतीय संस्कृति में पति–पत्नी के सम्बन्धों का आधार श्रद्धा, विश्वास, प्रेम, समर्पण और त्याग है। पत्नी पति को ही परमेश्वर मानती है। इसके विपरीत पाश्चात्य संस्कृति व्यक्ति के निजीपन को अधिक महत्त्व देती है और अपने निजीपन अथवा अहं की रक्षा करने के लिए ही सम्बन्धों में उच्च भावों के विपरीत हिंसा, स्वार्थ, झूठ, छल–कपट ने स्थान ले लिया है जिससे पारिवारिक रिश्तों में बिखराव आया है। इस बिखराव का प्रभाव नव–पीढ़ी पर स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है।

भारतीय संस्कृति अध्यात्मवादी संस्कृति है। अर्थात् भारतीय संस्कृति में विश्वास रखने वाले सभी व्यक्ति ईश्वर में विश्वास करते हैं। किसी का निर्गुण में विश्वास है तो किसी का सगुण में। सभी भारतीय लोगों के लिए ईश्वर ही सृष्टि का जनक, पालक, संहारक, धर्म का रक्षक, अधर्म और अन्याय का विनाशक है। किन्तु दुर्भाग्य की बात है कि मूर्ति पूजा के कारण अशिक्षित जनता में स्वार्थी एवं कट्टरपंथी तथाकथित धर्माचार्यों ने अंधविश्वास की जड़ें जमाना प्रारम्भ कर दिया है। भाग्यवाद और अंधविश्वास के अंकुर बोकर ऐसे धर्म के ठेकेदार निरीह, अज्ञानी एवं अशिक्षित जनता का शोषण करने लगे। क्योंकि जनता के मन में भूत–प्रेत, ग्रह–नक्षत्रों के कुप्रभावों का भय जमा दिया और किसी भी आपदा के पीछे दैवी प्रकोप को कारण बताकर जनता को भयभीत करके पूजा और अनुष्ठान के नाम पर लोगों से धन ऐंठने लगे।

अंधविश्वास के पनपने का कारण स्पष्ट करते हुए डॉ. आनन्द शर्मा ने लिखा है, "समाज के आचार विचार अथवा रूढ़ियाँ पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलती आती हैं। उन्हें परम्परा कहा जाता है। परम्पराओं के आधार पर मनुष्य भूतकाल और भविष्यकाल में सम्बन्ध स्थापित कर सकता है। परम्परा के कारण संस्कृतियों का आदान–प्रदान होता है। परम्पराएँ मनुष्य के जीवन को नियंत्रित रखती हैं। लेकिन इन परम्पराओं और रूढ़ियों के कारण समाज में अंधविश्वास भी फैल जाते हैं। जो हमारी प्रगति में बाधक हो जाते हैं।"[2]

अमरकान्त ने अंध विश्वासों का खण्डन ही नहीं किया है, बल्कि इससे उत्पन्न विकृतियों को भी बड़े अच्छे ढंग से निरुपित किया है। ग्रामसेविका बनकर जब उपन्यास की नायिका गाँव में जाती है तो गाँव के वातावरण को देखकर उसको घोर आश्चर्य होता है। गाँव में फैले अंधविश्वास को लेखक अमरकान्त ने आरेखित करते यह भी सिद्ध किया है कि ये अंधविश्वासी परम्पराएँ भारत के हर हिस्से में प्रचलित हैं। दमयन्ती नामक पात्रा गाँवों के लोगों को समझाने हुए कहती है–

''दमयन्ती सारे गाँव में घूमती थी। उसके साथ जमुना और कनिया होतीं। कभी–कभी जंगी भी साथ होता और कभी हरचरण भी। उनके समझाने–बुझाने का लोगों पर कुछ–कुछ असर हो रहा था। लोगों ने पूजा–पाठ का असर देख लिया था। दमयन्ती कहती थी कि यह रोग है रोग, यह देवी–देवता नहीं है। अगर इस रोग से लड़ा नहीं जाएगा तो वह सारे गाँव को खत्म कर देगा। अन्धविश्वासों से कोई लाभ नहीं होता है। दुनिया बहुत तेजी से तरक्की कर रही है। विदेशों में तो लोगों ने पढ़–लिखकर तथा मेहनत करके ऐसी तरक्की कर ली है कि वहाँ हैजा, प्लेग, चेचक वगैरह का नाम भी खत्म होता जा रहा है। हैजे के टीके का इसीलिए इलाज होता है।''[3]

'आकाश पक्षी' नामक उपन्यास में भी अनेक धर्म आधारित मान्यताओं को लेखक ने अस्वीकार कर अपनी प्रगतिवादी चेतना को उजागर किया है। ये मान्यताऐं भी एक तरह का अंधविश्वास ही होती हैं, क्योंकि ये मनुष्यता को स्वतन्त्र रूप से विकसित नहीं होने देती।

''हमारे देश में स्त्री का जीवन सर्वथा परावलंबित होता है। पति जो करता है, जो सोचता है, वही स्त्री करती और सोचती है। युगों से न मालूम कितनी प्रतिभाशालिनी स्त्रियाँ इसी तरह और निकम्मे पतियों की सेवा करते–करते विनष्ट हो गई होंगी। अगर उनके स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास हुआ होता, तो बड़े–से–बड़ा काम करतीं। वे अपने परिश्रम, विचार और मानसिक शक्ति से पुरूषों के साथ क़दम मिलाकर चलतीं और परिवार तथा देश के जीवन को उन्नत, सहज एवं सरल बनातीं।''[4]

एक समाज ऐसा भी था जब हमारी धर्म विश्व पर राज करता था। हमारी धार्मिक परम्पराएँ, आस्थाएँ, विश्वास आदि का अनुकरण विश्व के अन्य धर्म कर रहे थे। हमारी धार्मिक परम्पराएँ इतनी ज्यादा उदार थी कि अनेक धर्म संस्कृतियाँ इसमें विलीन होकर हमारी परम्पराओं का अंग बन गई थी। शायद इसी कारण भारतीय संस्कृति विश्वगुरू के नाम से प्रसिद्ध हो चुकी है। समय के बदलते स्वरूप ने हमारी धार्मिक मान्यताओं को भी प्रभावित करना आरम्भ कर दिया। फलतः धीरे–धीरे हमारे धर्म का उज्जवल रूप विकृत होने लगा। धर्म की गलत व्याख्याएँ होने लगी। धर्म के नाम पर लोगों को भड़काना शुरू कर दिया गया। फलतः हमारे धर्म में अनेक अंधविश्वासों ने जड़ें जमानी शुरू कर दी। वर्तमान में ये जड़े हमारे समाज में इतनी गहराई तक फैल चुकी हैं कि जनसाधारण धर्म से ज्यादा अंधविश्वासों को धर्म समझने लगा है। उपर्युक्त सभी समस्याओं को लेखक ने अपने विभिन्न उपन्यासों द्वारा सफल अभिव्यक्ति प्रदान की है। 'ग्रामसेविका' नामक उपन्यास में अंधविश्वासों का बड़ा ही सुन्दर वर्णन अमरकान्त ने प्रस्तुत किया है। यहाँ बच्चों के बिमार होन पर देवीय प्रकोप समझा जाता है जिसकी दवा झांड़–फूँक होती है। अगर सरकारी डॉक्टर टीका–दवाई देता तो लोग घर में छुप जाते

दमयन्ती की सूचना पर बी.डी.ओ. साहब ने एक दिन सरकारी डॉक्टर भेजा गाँव में। परन्तु टीके का नाम सुनकर लोग बहुत आतंकित हो गए। औरतों का ख्याल था कि टीके से देवी नाराज हो जाएँगी। कुछ यह सोचती थी कि इससे धर्म चौपट हो जाएगा। मर्दों का भी यही हाल था। डॉक्टर के आते ही औरतों ने अपने बच्चों को बाहर भगा दिया। मर्द भी किसी न किसी काम का बहाना करके गायब हो गए थे। भीतर से औरतों ने दरवाजा बन्द कर लिया था। लोग एक अजीबन नासमझी, अकर्मण्यता तथा भाग्यवादिता के शिकार हो गए थे। बहुत कम लोगों ने टीका लगवाया जिनमें हरचरण, कनिया, जमुना, उसके दोनों बच्चे, जंगी तथा विनय के नाम उल्लेखनीय हैं। रमैनी सहुआइन तथा बिलरी दोनों ने टीके नहीं लगवाए। उनका विश्वास था कि इससे उनका धर्म चौपट हो जाएगा। जंगी ने बिलरी को बहुत समझाया, परन्तु जैसी कि उसकी आदत थी, वह पहले अपने मन की बात कर लेती थी और बाद में उस पर पश्चाताप करती थी।[5]

इसी प्रकार 'सुखजीवी' उपन्यास की पात्रा अहल्या थी अपने पति की सेवा को अपना धर्म समझती है। वह पूरी तरह दीपक के लिए अपने सुखः चैन को भेंट कर देती है। क्योंकि अहल्या जैसी नारियों को आरम्भ से ही यह शिक्षा दी जाती है कि पति की सेवा करना, उसको हर सुख प्रदान करना, बच्चों की सेवा करना आदि उनका धर्म है। लेकिन अमरकान्त ने निर्मला के माध्यम से इस धार्मिक विश्वास का विरोध किया है। जब आनन्द की पत्नी सुशील के सामने दीपक अपने वैवाहिक जीवन पर असंतोष एवं दुःख व्यक्त करता है तो निर्भला वर्तमान समाज के बदलते स्वरूप में स्त्री–पुरूष की भूमिका विवेचित करती हुई दीपक से कहती है– ''मैं रूपये पानी की तरह बहाती और इसमें अपनी शान समझती। अगर आपके मित्र मेरे कहने पर चले होते तो आज तबाह हो गए होते। लेकिन उन्होंने मेरे विचारों का इस तरह विरोध किया कि मुझे कुछ मालूम भी न हुआ और मैं पूरी तरह बदल गयी। इनसे

मैंने पहले पहल सीखा कि अपने रूप और बुद्धि पर घमंड करने का क्या मतलब होता है। मैं ही जानती हूँ कि वह सबसे हँसकर बोलते हैं, सबकी बातें सुन लेते हैं और अपना काम अपने हाथ से करते हैं तो उसका क्या मतलब है। उनके घर के लोग कहते हैं कि ''वह बमभोला हैं, वह तेज नहीं जैसे और लोग होते हैं। वह कुछ अधिक नहीं पाते, लेकिन इतनी तनख्वाह में यह रेडियो भी हुआ है, यह सोफासेट भी– सारे सामान। मैंने उनसे सीखा है कि अगर अपने पर घमंड करना है तो अपने हाथ से अपना काम करो, झूठी शान–शौकत और फिजूलखर्ची न करो और साथ ही दूसरों की कद्र करो। वह सबेरे उठकर घर की सफाई करते हैं, जिस थाली में खाते हैं उसको खुद साफ कर देते हैं, बच्चों की सफाई–दफाई भी खुद करते हैं। शाम को बच्चों को खुद अपने साथ टहलने ले जाते हैं, सबेरे एक घंटा उनको पढ़ाते हैं। असल बात यह है कि घर–गृहस्थी अकेले नहीं चलती, उसमें दोनों की मदद चाहिए।''[6]

इस तरह हमें आधुनिक बनना होगा, तभी सामाजिक अंधविश्वासों से निजात पाई जा सकती है। जमुना कहती भी है कि बीमारी का इलाज दवाईयों से होता है झाड़–फूकें से नही। भूत–प्रेत नही हैं। जमाना बहुत तेजी से बदल रहा है। बड़े–बड़े रोगों की दवाएँ तैयार हो गयी हैं। पहले दवाओं की सुविधा नहीं थी तो लोग झाड़–फूँक से सन्तोष कर लेते थे।..... अनगिनत बच्चे हर वर्ष अंधविश्वासों के कारण मर जाते हैं। कोई भी बात होने पर फौरन डाक्टर के यहाँ जाना चाहिए।''[7]

उर्पयुक्त कथन से लेखक सिद्ध करना चाहता है कि वर्तमान परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं। इसलिए स्त्री और पुरूष को भी बंधी बधाई परिपाटी में नहीं चलना चाहिए। परिवार को चलाने की जिम्मेदारी सिर्फ स्त्री की नहीं होती पुरूष को भी इसमे सहयोग देना चाहिए। जबकि निम्न मध्यम वर्ग में होता इससे उल्टा है। वह जाति को भी एक अंधविश्वास की तरह देखकर इसको धर्म से जोड़कर अपने आपको संकुचित कर लेता है। 'सूखा पत्ता' उपन्यास में अमरकान्त ने ऐसी मानसिकता पर चोट करते हुये कृष्ण से कहलवाया है – ''जाति की मैं नहीं मानता'', मैं किंचित उत्तेजित स्वर से बोला, ''जाति एक सामाजिक ढकोसला हैं, अपने झूठे अहंकार का कमजोर किला। कुछ साधन–सम्पन्न लोगों ने कमजोरों को दबाना चाहा और इसके लिए उनकी सीमाएं निश्चित कर दीं। इस संसार में दो ही जातियां हैं, एक अच्छे लोगों की और दूसरी बुरे लोगों की, एक साधन–सम्पन्न लोगों की और दूसरी साधन–विहीन लोगों की। क्या ब्रह्मामण जाति में एक–से–एक कमीने, बदमाश, व्यभिचारी और लुच्चे नहीं भरे हैं ? क्या और दूसरी जातियों में अच्छे लोग नहीं हैं ? क्या यह सच नहीं है कि ऊंची कही जाने वाली जातियों के लोग छिपकर कुकर्म करते हैं और फिर भी अपने को श्रेष्ठ समझते हैं ? जाति के विभाजन..... ।''[8]

इस तरह अमरकान्त ने सिद्ध करना चाहा है कि अब समय बदल चुका है इसलिए पुरानी पीढी को भी युवा पीढी के साथ चलना चाहिए। लेखक ने 'ग्रामसेविका' उपन्यास में भी सड़े–गले अंधविश्वासों की बात उठाकर इनसे निजात पाने का रास्ता भी बताया है। लेखक गाँवों में प्रचलित धर्म आधारित विभिन्न अंधविश्वासों को वाणी देते हुए उपर्युक्त उपन्यास में लेखक लिखता है कि हमारे समाज की ग्रामीण औरतें आज भी नजर, भूत–प्रेत, जादू–टोने आदि अंधविश्वासों से ग्रस्त है। इन्हीं और संकेत करते लेखक जमुना नामक पात्रा के प्रसव वातावरण को आरेखित करता हुये लिखता है

''जमुना के दिन पूरे हो गए थे और एक दिन उसको बच्ची हुई। प्रसव कराने का काम चमेलिया चमाइन ने किया था। एक छोटी कोठरी में सौरगृह बनाया गया। इस कोठरी के पीछे की ओर दीवार के ऊपर बिल की तरह एक छोटी खिड़की थी जिसको बन्द कर दिया गया। कोठरी का दरवाजा भी उठँगा दिया गया। कोठरी के भीतर और दरवाजे पर बोरसी में आग जला दी गई। दरवाजे पर एक बन्दर की खोपड़ी तथा जूते टाँग दिए गए। जैसा कि इस गाँव के लोगों में विश्वास था, ऐसा इसलिए किया गया कि बच्चे को भूत–प्रेत और हवा–बतास न लगे।''[9]

इस तरह प्रसव घर में प्रचलित अंधविश्वासों के कारण नवजात बच्ची बिमार पड़ जाती है, लेकिन उसकी बिमारी को ठीक करने के लिए रधिया मिसिराइन को बुलाया जाता है जो कि पूरे गाँव में झाड़–फूँक करने, प्रेत उतारने के लिए प्रसिद्ध है।

खुरपी लेकर मिसिराइन ने उसके फल को बच्ची के पेट पर फेरा। साथ में कुछ बुदबुदाती भी रही। आखिर में एक काला तागा अपने आँचल में से निकालकर बच्ची के गले में बाँधा और बोली, ''दो घंटे बाद सिरहाने साँप की केंचुल का धुआँ देव। दरवाजा और खिड़की खुली न रहे। बच्ची का पूरा शरीर ढका रहे। दालान में एक बोरसी रखवा दो। कोई बाहरी आदमी बिना पैर सेंके और कपड़ा झाड़े भीतर न आए। शाम तक ठीक हो जाएगा।''[10]

लेकिन बच्ची की हालत नहीं सुधरती है। दमयन्ती आकर ही डॉक्टर से दवा मंगवाकर उसे ठीक करती है। वह जमुना को समझाती है– ''भूत–प्रेत कुछ नहीं। ज़माना तेजी से बदल रहा है। बड़े–बड़े रोगों की दवाएँ तैयार हो गई हैं। पहले दवाओं की सुविधा नहीं थी तो लोग झाड़–फूँक से ही संतोष कर लेते थे। कुछ बच्चे अच्छे हो जाते थे तो लोग समझते थे कि यह झाड़–फूँक का ही असर

है, परंतु अनगिनत बच्चे पर हर वर्ष इन्हीं अंधविश्वासों के कारण मर जाते हैं। कोई भी बात होने पर फौरन डॉक्टर के यहाँ जाना चाहिए।''[11]

लेखक अमरकान्त ने इन बुराईयों का विरोध ही नहीं किया, बल्कि इसके समाधान के लिए शिक्षा को सबसे बड़े हथियार के रूप में प्रस्तुत किया है। 'आकाश पक्षी' उपन्यास में हेमवती कहती है कि पुरानी अन्धविश्वासों पर आधारित मान्यताओं को छोड़ देना ही श्रेयकर होता है। इसी आशय को प्रकट करते, हुये वह कहती है– ''पुरानी मान्यताओं को तोड़ना उस समय आसान होता है, जब हम शिक्षित हों, हमारा हृदय उन्मुक्त हो और जब हम दूसरों से मिलें–जुलें। लेकिन जब हमारा हृदय अपनी ही सीमाओं को सब–कुछ समझता हो, तो किसी चीज़ को बदला नहीं जा सकता। अपने चारों ओर लक्ष्मण–रेखा खींचकर अपने घमंड और झूठी शान में डूबे रहना उस गड्ढे के पानी की तरह है, जिसका विकास नहीं होता और जो धीरे–धीरे सड़ता रहता है।''[12]

धर्म से तात्पर्य आडम्बर व मिथ्याचार कदापि नहीं है। हर वह कर्म धर्म ही है, जिससे ज्ञान का प्रकाश आलोकित हो रहा हो। जो कर्म अज्ञान से जन्मा है और जो राग व द्वेष से भरा हो तथा जिसके मूल में अहंकार, सांप्रदायिकता व रूढ़िवाद हो वह धर्म नहीं हो सकता। ऐसे कर्म जो समाज के लिए, राष्ट्र के लिए तथा समस्त मानव जाति के लिए कल्याणकर हो धर्म के अन्तर्गत आते हैं। धर्म के अनुकूल आचरण करने से मनुष्य को सुख की प्राप्ति होती है। इस प्रकार अमरकान्त ने भारतीय समाज में प्रचलित अंधविश्वासों का बड़ा ही सुन्दर वर्णन करने के साथ– इन अंधविश्वासों से उपजी समस्याओं को भी युगानुरूप वाणी देकर अपने स्वस्थ युगबोध का परिचय दिया है।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ० सुरेन्द्र प्रसाद, साठोत्तरी हिन्दी कहानी साहित्य में चित्रित ग्रामीण समस्याएँ, पृ. 150
2. उपन्यासकार कमलेश्वर : समाजशास्त्रीय निकष पर, डॉ. आनन्द शर्मा, पृ० 193
3. अमरकान्त, ग्रामसेविका, पृ० 123
4. अमरकान्त, आकाश पक्षी, पृ० 183
5. अमरकान्त, ग्रामसेविका, पृ० 122
6. अमरकान्त, सुखजीवी, पृ० 46–47
7. अमरकान्त, ग्रामसेविका, पृ० 29
8. अमरकान्त सुखा पत्ता, पृ० 205
9. अमरकान्त, ग्रामसेविका, पृ० 25
10. वही, पृ० 27
11. वही, पृ० 29
12. अमरकान्त, आकाश पक्षी, पृ० 46

SHRADHA EDUCATIONAL ACADEMY